International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 9, Issue 12, December 2022
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

विद्यार्थियों के किशोरावस्था के बीचपारिवारिक वातावरण एवं संवेगात्मक विकास का अध्ययन

MITHLESH KUMARI
RESEARCH SCHOLAR, THE GLOCAL UNIVERSITY SAHARANPUR UTTAR PRADESH

DR. DHARMENDRA SINGH
PROFESSOR, THE GLOCAL UNIVERSITY, MIRZAPUR POLE, SAHARANPUR, U.P

सारांश

शिक्षा आजीवन चलने वाली सचेतन एवं प्राणमयी प्रक्रिया है। जन्म लेने के पश्चात् ही व्यक्ति अनेक परिस्थितियों का सामना करता है और विकासोन्मुख होता हुआ आगे बढ़ता रहता है। परिवर्तन की इस प्रक्रिया में वह अनुभव ग्रहण करता है इस अनुभव को ग्रहण करने में ही शिक्षा निहित है इसे परिभाषित करते हुए प्रो0 अदावल, सुबोध ने कहा है कि, ''शिक्षा वह सविचार प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति के विचारों एवं व्यवहारों में परिवर्तन एवं परिवर्धन होता है उसके स्वयं तथा समाज के कल्याण के लिए।'' इस प्रकार की शिक्षा की परिकल्पना अत्यन्त व्यापक अर्थ में की गयी है जहां तक औपचारिक षिक्षा का सम्बन्ध है उसका सशक्त व सबल माध्यम है– शिक्षण। शिक्षण, शिक्षक, शिक्षार्थी तथा पाठ्यक्रम के मध्य चलने वाली वह प्रक्रिया है जिससे बालक की समस्त शक्तियों का स्वाभाविक विकास होता है जिससे कि बालक समाज का उपयोगी नागरिक बन सके।

मुख्यशब्द:शिक्षा, आजीवन, विकासोन्मुख, शक्तियों, परिभाषित, परिस्थितियों

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

प्रस्तावना

शिक्षा वह प्रक्रिया है जो मनुष्य में पहले से ही अधूरी है, उसे प्रकट करने की प्रक्रिया है। बेहतर शिक्षा जीवन की गुणवत्ता के लिए मानव ज्ञान और सशक्तिकरण के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह एक राष्ट्र के राष्ट्रीय कल्याण, विकास, समृद्धि और उत्थान के लिए आधार प्रदान करता है। शिक्षा, "मानव संसाधन का सबसे महत्वपूर्ण घटक है। इसलिए प्रत्येक समाज व्यक्तिगत प्रतिभा का सही उपयोग करना चाहता है। हम न्यूनतम संसाधनों के माध्यम से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करना चाहते हैं, इसलिए हमें अपने युवाओं की अधिकतम उपलब्धियों के लिए प्रयास करना चाहिए और उन्हें इस तरह प्रशिक्षित करना चाहिए कि वे उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कर सकें। यह व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है, यदि विद्यार्थियों को महाविद्यालय शिक्षा से अपनी क्षमता को अधिकतम करना है तो उन्हें अपने माता–पिता के पूर्ण समर्थन की आवश्यकता होगी। शिक्षा में माता–पिता की भागीदारी बढ़ाने के प्रयास दुनिया भर में सरकारों, प्रशासकों, शिक्षकों और माता–पिता के संगठनों पर कब्जा कर लेते हैं। यह अनुमान लगाया जाता है कि माता–पिता को न केवल अपने बच्चों की उपलब्धियों को बढ़ावा देने में भूमिका निभानो चाहिए बल्कि महाविद्यालय सुधार और महाविद्यालय प्रशासन के लोकतंत्रीकरण में अधिक व्यापक रूप से भूमिका निभानी चाहिए। इस व्यस्त, प्रतिस्पर्धी और जटिल दुनिया में छात्रों का अकादमिक प्रदर्शन शोधकर्ताओं के लिए कच्चे माल में विविधता और जीवंतता प्रदान करता है। माता–पिता, शिक्षक और प्रशासक छात्रों की व्यक्तिगत जरूरतों की संतुष्टि को ध्यान में रखते हुए छात्रों के प्रदर्शन को ऊपर उठाने के लिए नए और अभिनव तरीकों और प्रवृत्तियों की तलाश करने का प्रयास करते हैं। विशेष शिक्षा, परीक्षण की तैयारी, और मूल्यांकन रणनीतियों सहित कई क्षेत्रों में प्रगति की गई है, बस कुछ का उल्लेख करने के लिए। हालांकि, बढ़ी हुई छात्र प्रेरणा के सबसे प्रभावी क्षेत्रों में से एक महाविद्यालय में नहीं, बल्कि छात्रों के घरों में है। माता–पिता की भागीदारी जारी है, ष्छात्र उपलब्धि और प्रेरणा में सबसे प्रभावशाली कारक। जिन छात्रों के माता–पिता उनके महाविद्यालय जीवन में निकटता से शामिल होते हैं और जो उनकी प्रगति की निगरानी करते हैं, वे महाविद्यालय में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं। माता–पिता और शिक्षकों का दृष्टिकोण महत्वपूर्ण कारक हैं जो छात्रों को उनके

महाविद्यालय के प्रदर्शन में प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, जिस तरह से माता–पिता अपने बच्चों की देखभाल करते हैं और जिस तरह से शिक्षक छात्रों के साथ व्यवहार करते हैं, उसका महाविद्यालय में छात्रों के व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। जिस तरह से माता–पिता अपने बच्चे के साथ संबंध रखते है और शिक्षक अपने छात्रों को संभालते हैं, वह भी महाविद्यालय में एक छात्र के अकादमिक प्रदर्शन को समझाने में मदद करता है।[8] सीखने और छात्रों की उपलब्धि में सुधार के प्रयासों के बावजूद, छात्रों के प्रदर्शन के परिणाम के संबंध में अभी भी मुद्दे हैं।एक व्यक्ति के रूप में जो नियमित रूप से समुदाय के छात्रों के साथ काम करता है, शोधकर्ता यह कहने में सक्षम है कि जिन व्यक्तियों के साथ वह विभिन्न सेवाओं में शामिल हुए हैं, वे समुदाय में सकारात्मक अनुभवों की मात्रा बढ़ाने के लिए बहुत अधिक प्रेरित हुए हैं। इन छात्रों के कई माता–पिता महाविद्यालय के वर्षों के दौरान भी शामिल रहते हैं। बेशक, यह कोई आसान काम नहीं है। जैसे–जैसे बच्चे अपनी किशोरावस्था के करीब आते हैं, कई माता–पिता को अपने बच्चों के लिए जाने और वहां रहने के बीच संतुलन बनाना मुश्किल हो जाता है। महाविद्यालय के वर्ष युवा लोगों के लिए कठिन होते हैं, जो साथियों के बढ़ते दबाव, नाटकीय शारीरिक परिवर्तन और अधिक स्वतंत्रता के लिए जागृति की आवश्यकता से भरे होते हैं। शोध से पता चलता है कि पूर्व–किशोर और किशोरावस्था की शुरुआत में माता–पिता की भागीदारी कम होने लगती है– लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि बच्चों को अभी भी इससे लाभ नहीं होगा।

माता–पिता की भागीदारी हासिल करने के लिए सरकार की रणनीति पहली बार 1997 के श्वेत पत्र, 'मिहाविद्यालय में उत्कृष्टता' में निर्धारित की गई थी। वर्णित रणनीति में तीन तत्व शामिल थे

क) माता–पिता को जानकारी प्रदान करना

इ) माता–पिता को आवाज देना

ग)महाविद्यालयों के साथ माता–पिता के सहयोग को प्रोत्साहित करना

यह रणनीति तब से गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला के माध्यम से निभाई गई है जिसमें शामिल हैं

माता–पिता की शासी भूमिका बढ़ाए।

निरीक्षण प्रक्रियाओं में भागीदारी।

वार्षिक रिपोर्ट और प्रॉस्पेक्टस का प्रावधान।

घर–महाविद्यालय समझौतों की आवश्यकता।

पाठ्यचर्या और महाविद्यालय के प्रदर्शन के बारे में जानकारी की बढ़ती मात्रा का प्रावधान।

अपने बच्चों के सर्वांगीण विकास में माता–पिता की भागीदारी मे गिरावट के कारक कारकों का विश्लेषण करने के लिए विभिन्न शोध किए गए हैं। किशोरों में माता–पिता की भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि वे मध्य में प्रवेश कर रहे हैं और महाविद्यालय एक दोधारी तलवार है। सबसे पहले, जो बच्चे परिपक्व होने लगे हैं, उनमें स्वयं और स्वतंत्रता की भावना विकसित करने की बढ़ती आवश्यकता है जो उनके परिवारों से अलग है। वे विकल्पों और परिणामों को तौलना शुरू करते हैं, अपने दम पर अधिक निर्णय लेते हैं, अपनी गलतियों से सीखते हैं, और अपने निर्णयों और कार्यों को निर्देशित करन के लिए मूल्यों का अपना सेट स्थापित करते हैं। वे अपने माता–पिता से मदद से इनकार करने लगते हैं और गतिविधियों और अपने दोस्तों से मिलने के दौरान उन्हें साथ नहीं चाहते हैं। दूसरा, माता–पिता की भूमिकाएँ भी एक बदलती प्रक्रिया से गुज़र रही हैं; ताकि उनके बच्चों के आत्म–पहचान के विकास की अनुमति मिल सके। जबकि माता–पिता समर्थन और प्यार की पेशकश करना जारी रखते हैं, वे अपने बच्चों की बढ़ती स्वतंत्रता और परिपक्व होने की प्रक्रिया के लिए उनकी समझ के प्रति सम्मान दिखाने के लिए अपने बच्चों को अधिक से अधिक जगह देना शुरू करते हैं। माता–पिता को चाहिए कि वे किशोरों को अपने चुनाव स्वयं करने दें–अच्छे और बुरे– और उन्हें अपने कार्यों और निर्णयों की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। महाविद्यालय के वर्षों में माता–पिता की भागीदारी में गिरावट को बच्चों के दृष्टिकोण में बदलाव से भी जोड़ा जा सकता है। युवा लोग यह स्पष्ट

करते हैं कि वे नहीं चाहते कि उनके माता–पिता उनके पालन–पोषण और महाविद्यालयी शिक्षा में वही बड़ी भूमिका निभाएं जो उन्होंने एक बार की थी। कई अभिभावक–छात्र गतिविधियाँ जो महाविद्यालय में स्वीकार्य लगती हैं, जैसे कक्षाओं के लिए पंजीकरण करना, महाविद्यालय के कार्यक्रमों में भाग लेना, या पैदल आना–जाना, महाविद्यालय के छात्रों द्वारा केवल–छात्रों की घटनाओं के रूप में देखा जाता है। बच्चे अपने नए महाविद्यालय के वातावरण के साथ तालमेल बिठाना और उनका सामना करना शुरू कर देते हैं और अपने नए पाठ्यक्रमों की चुनौतियों का सामना करते हैं। माता–पिता को अपने बच्चे महाविद्यालय में जो काम कर रहे हैं, उसकी समझ कम हो सकती है। विभिन्न शोधों में पाया गया है कि माता–पिता ने अपने बच्चों की शिक्षा में कम शामिल होने का नंबर–एक कारण छात्र पाठ्यक्रम की बढ़ती कठिनाई के कारण दिया था। माता–पिता होमवर्क में मदद करने में असमर्थ महसूस कर सकते हैं और शिक्षकों के साथ पाठ्यक्रम के मुद्दों पर चर्चा करने में संकोच कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वे समग्र रूप से कम शामिल हो जाते हैं। महाविद्यालय समय के दौरान अपने बच्चों के लिए माता–पिता और माता–पिता के लक्ष्यों के लिए शिक्षकों की अपेक्षाओं के बीच की खाई को पाटने के लिए संचार एक प्रमुख घटक है। माता–पिता और शिक्षकों के लिए उपलब्ध जानकारी की मात्रा में वृद्धि करके, सफलता की ओर एक स्पष्ट मार्ग होगा। इसमें से बहुत कुछ चल रहा है, हालांकि; अधिक शिक्षक माता–पिता तक पहुंच रहे हैं, और माता–पिता के प्रयासों और उनके बच्चों की स्थिति में सुधार के लिए भागीदारी में भी वृद्धि हुई है।

उच्चशिक्षा

शिक्षा एक सतत् चलने वाली प्रक्रिया है जिसका न कोई आदि है न अन्त। मानव जन्म से लेकर अपने अस्तित्व के धूमिल होने तक शिक्षारत रहता है। बस यदि कुछ बदलता है तो वह शिक्षा का स्वरूप प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, व्यवसायिक एवं तकनीकी शिक्षा इत्यादि किन्तु विवेचन करने से स्पष्ट होता है कि शिक्षा में उच्च शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण स्तर है। यह प्राथमिक और उच्च शिक्षा के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने वाली कड़ी है। इस शिक्षा का सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में विशेष महत्व है। कशोर

बालक–बालिकाओं में ज्ञानवर्धन के साथ–साथ सामाजिक सद्गुणों का विकास अधिकारों एवं कर्तव्यों का ज्ञान राष्ट्रीय एकता एव अखण्डता के प्रति जागरूकता, आत्म निर्भता और आत्म विश्वास आदि चारित्रिक गुणों का विकास करना उच्च शिक्षा का मूल उद्देश्य है।

उच्च शिक्षा सामान्य शिक्षा की परिसमाप्ति है। बालक के विकास की किशोरावस्था से सम्बन्धित होने के कारण तथा युवा शक्ति के नेतृत्व प्रशिक्षण का केन्द्र होने के कारण उच्च शिक्षा राष्ट्र की सामाजिक आर्थिक तकनीकी तथा सांस्कृतिक क्षमता को सर्वाधिक प्रभावित करती है। उच्च शिक्षा रोजगार तथा जीवन–यापन के क्षेत्र में प्रवेश का द्वार खोलती है। किसी भी राष्ट्र की मानव शक्ति का एक बहुत बड़ा भाग उच्च शिक्षा स्तर से ही प्राप्त होता है। तृतीय उच्च शिक्षा प्राथमिक शिक्षा व उच्च शिक्षा स्तरों की गुणवत्ता को निर्धारित करती है। प्राथमिक महाविद्यालयों के अधिकांश अध्यापक उच्च शिक्षा प्राप्त होते हैं तथा उनकी शिक्षा की गुणवत्ता काफी सीमा तक प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। इसी प्रकार से विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा अन्य उच्च शिक्षा के केन्द्रों के लिए छात्रों की पूर्ति का कार्य भी उच्च शिक्षा करती है। उच्च शिक्षा के लिए उच्च शिक्षा आधार–शिला का कार्य करती है। स्पष्ट है इन तीनों दृष्टियों मेंउच्च शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है।

वर्तमान शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्ति लाने का श्रेय मनोविज्ञान को है। शिक्षा में मनोवैज्ञानिक प्रकृति के विकास के फलस्वरूप शिक्षा को बाल कन्द्रित बनाने का प्रयास किया गया और शैक्षिक समस्याओं का अन्त करने के लिए शिक्षा शास्त्रिया ने शिक्षा के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक सिद्वान्तों पर बल दिया। आज शिक्षा का अर्थ बालक को केवल सूचना प्रदान करना नहीं समझा जाता।

संवेग

संवेगों का बालक के जीवन में अति महत्वपूर्ण स्थान है। श्रेष्ठ संवेगों पर आधारित व्यवहार बालक के स्वास्थ्य को समुन्नत, मानसिक दृष्टिकोण को उदार, कार्य करने की इच्छा को जाग्रत कर बल प्रदान और सामाजिक संबंधों को मधुर बनाते हैं। इसके विपरित क्षुद्र संवेगों पर आश्रित व्यवहार बालक के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास पर क्षतिप्रद प्रभाव डालकर उसको विकृत कर सकते हैं।

संवेग शब्द अंग्रेजी शब्द इमोशन का पर्यायवाची है। इस शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के इमोवियर से हुई है जिसका अर्थ है हिला देना, उत्तेजित करना या आंदोलित करना। जब भी संवेग की स्थिति आती है व्यक्ति में बेचैनी आ जाती है। कसी भी परिस्थिति मे ं व्यक्ति का व्यवहार कोमलता, भय, क्रोध, विरोध, ईर्ष्या आदि से युक्त हो जाता है। कई बार व्यक्ति ऐसा संवेगात्मक कर जाता है जिसका कारण उसे ज्ञात नहीं होता इसलिये संवेगों का संतुलित विकास होना अनिवार्य है। संवेग एक प्रकार की ऐसी भावनाओं या भावात्मक अनुभूति होता है जिनकी उपस्थिति का अहसास कछ विशेष प्रकार केशारीरिक लक्षणों से होता है तथा जिसके वशीभूत व्यक्ति कुछ विशेष प्रकार की चेष्टाये तथा व्यवहार क्रियायें करते हुए देखा जाता है।

1. प्रत्यक्षीकरण के माध्यम से इसकी उत्पत्ति होगी।

2. इसमें भावनाओं के उफान का दर्शन होना।

3. कई प्रकार के शारीरिक लक्षणों से इसकी उपस्थिति का आभास होना।

4. इसका तेजी से जागृत होना परंतु अंत धीरे–धीरे होना।

5. इनमें स्थानान्तरणता के गुण का पाया जाना आदि।

6. इसका किसी मूल प्रवृत्ति अथवा मूलभूत आवश्यकता से जुड़ा रहना।

संवेगों को मुख्य रूप से दो वर्गो – सकारात्मक तथा नकारात्मक संवेग में बाँटा जा सकता है। व्यक्ति और समाज दोनों के लिये हितकारी प्रेम, आमोद सृजनात्मकता आदि संवेगों को सकारात्मक संवेगों का दर्जा दिया जाता है जबकि भय, क्रोध, ईर्ष्या आदि विषादयुक्त संवेग नकारात्मक संवेग कहलाते हैं। संवेग चाह नकारात्मक हो या सकारात्मक वे व्यक्ति विशेष के लिये परिस्थति विशेष अनुसार लाभकारी सिद्ध होते है ं क्योंकि उनका प्रादुर्भाव व्यक्ति के मस्तिष्क, हृदय और इन्द्रियों को उसकी व्यवहार क्रियाओं के माध्यम से जोड़ता है। क्रोध, मद, घृणा और अवसाद जिन्हें हम गलत संवेग समझते हैं वे भी समय और परिस्थिति अनुसार उतने ही आवश्यक और हितकारी होते हैं, जितने कि साहस, प्रेम, शांति और हमें अपने संवेगों को उचित समय पर उचित मात्रा में उचित उप से अभिव्यक्त करने का ही आदर्श मानकर बोलना चाहिये कि "कोई भी व्यक्ति क्रोध कर सकता है यह बहुत आसान है परन्तु सही व्यक्ति के साथ सही मात्रा में सही समय पर सही प्रयोजन हेतु सहीढंग से क्रोध करना आसान नही है।

किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास

कशोरावस्था में संवेगात्मक संतुलन बिगड़ जाता है उस समय संवेगों में आँधी और तूफान की सी गति और प्रचण्डता होती है इसलिये किशोरावस्था को प्रायः तूफान और तनाव का समय माना जाता है। जीवन की किसी अन्य अवस्था में संवेगात्मक शक्ति का प्रवाह इतना भीषण नहीं होता जितना कि इस अवस्था में पाया जाता है। एक किशोर के लिये अपने संवेगों पर नियंत्रण रखना बहुत कठिन होता है। इस अवस्था में किशोर संवेगात्मक दृष्टिकोण से बहुत चंचल और अस्थिर हो जाते हैं। शिशु की तरह किशोर क्षण में रूष्ट और क्षण में तुष्ट दिखाई देते हैं। जरा–जरा सी बात पर बिगड़ पड़ना, उत्तेजित हो जाना, निराश होकर आत्महत्या पर उतारू हो जाना आदि किशोरों के संवेगात्मक व्यवहार की सामान्य विशेषताएँ है।

इन सब बातों को देखते हुए इस अवस्था में संवेगों को ठीक प्रकार से प्रशिक्षित करने और संवेगात्मक शक्तियों को अनुकूल दिशा में प्रवाहित करने की अत्यंत आवश्यकता है। हैडो रिपोर्ट के अनुसार युवाआ की धमनियों में 11 से 12 वर्ष की अवस्था से ही ज्वार उमड़ना प्रारंभ हो जाता है, इसे किशोरावस्था के नाम से पुकारा जाता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयोग किए गए उपकरणों की सहायता से एकत्र किए गए आकड़ों को व्यवस्थित कर एवं तालिका वद्ध कर व्याख्या की गयी है जिसके फलस्वरूप अध्ययन के परिणामों व व्याख्या के आधार पर जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं, उच्च पारिवारिक वातावरण वाले शहरी छात्रों की तुलना में निम्न पारिवारिक वातावरण वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न है जबकि उच्च तथा निम्न पारिवारिक वातावरण वाली शहरो छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में समानता है। इसी भांति उच्च तथा निम्न पारिवारिक वातावरण वाले ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि समान है, जबकि उच्च पारिवारिक वातावरण वाली ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि निम्न पारिवारिक वातावरण वाली छात्राओं से अधिक है। उच्च तथा निम्न समायोजित शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में समानता है जबकि निम्न समायोजित शहरी छात्रों की तुलना में उच्च समायोजित शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च है। इसी भांति उच्च तथा निम्न समायोजित ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में समानता है जबकि उच्च समायोजित ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि, निम्न समायोजित ग्रामीण छात्राओं से अधिक है।

उच्च तथा निम्न सांवेगिक परिपक्वता वाली शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में समानता है जबकि उच्च सांवेगिक परिपक्वता वाले शहरी छात्रों की तुलना में निम्न सांवेगिक परिपक्वता वाले शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि कम है। इसी भाँति उच्च तथा निम्न सांवेगिक परिपक्वता वाली ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि समान है जबकि उच्च सांवेगिक परिपक्वता वाली ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि, निम्न सांवेगिक परिपक्वता वाली ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। उच्च पारिवारिक वातावरण वाले शहरी विज्ञान छात्रों एवं निम्न पारिवारिक

वातावरण वाले शहरी विज्ञान छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि शहरी कला छात्राओं की अपेक्षा उच्च है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- अमित कौत और नीलम शर्मा (2019) तनाव के संबंध में अकादमिक प्रदर्शन पर योग का प्रभाव, इंट जे योग। 2019 जनवरी–जून; 2(1)रू 39–43.
- एना बोक्स्ज़ज़ैनिन, (2018) ने माता–पिता के समर्थन, पारिवारिक संघर्ष और अधिक सुरक्षा का अध्ययन कियारू प्राकृतिक आपदा के 28 महीने बाद किशोरों के पीटीएसडी लक्षण स्तरों की भविष्यवाणी करना। चिंता, तनाव और मुकाबला, अक्टूबर 2018; 21(4)रू 325–335
- आर्थर, एन। (2018)। महाविद्यालय के छात्रों की मुकाबला करने की रणनीतियों पर तनाव, अवसाद और चिंता का प्रभाव। जर्नल ऑफ कॉलेज स्टूडेंट डेवलपमेंट, 39, 11–22।
- बाली, एसजे (2018)। जब माँ और पिताजी मदद करते हरू होमवर्क के साथ माता–पिता की भागीदारी पर छात्र प्रतिबिंब। जर्नल ऑफ रिसर्च एंड डेवलपमेंट इन एजुकेशन, 31(3), 142–46।
- बल्ली, एसजे, डेमो, डीएच, और वेडमैन, जेएफ (2018)। बच्चों के गृहकार्य में परिवार की भागीदारीरू मध्यम कक्षा में हस्तक्षेप। पारिवारिक संबंध, 47, 149–57।
- बानो फखरा बटूल, सुपीरियर यूनिवर्सिटी (2015) इमोशनल इंटेलिजेंस एंड इफेक्टिव लीडरशिप
- ब्रू, जे.ए., और इरविन, जे.एल. (2015)। माता–पिता की भागीदारी मध्यम विद्वानों के बीच शैक्षणिक सुधार का समर्थन करती है। मिडिल स्कूल जर्नल, 32(5), 56–61।

- कैलाहन, के., राडेमाकर, जे.ए., और हिल्ड्रेथ, बी.एल. (2018)। जोखिम वाले छात्रों के होमवर्क प्रदर्शन में सुधार के लिए रणनीतियों में माता–पिता की भागीदारी का प्रभाव। उपचारात्मक और विशेष शिक्षा, 19 (3), 131–41।
- चार्ल्स डेसफोर्गेस और अल्बर्टो अबूचार। छात्र उपलब्धियों और समायोजन पर माता–पिता की भागीदारी, माता–पिता की सहायता और पारिवारिक शिक्षा का प्रभावरू एक साहित्य समीक्षा, अनुसंधान रिपोर्ट आरआर 433, शिक्षा और कौशल विभाग, जून 2015।
- क्रिस्टेंसन, एस.एल., और शेरिडन, एस.एम. (2015)। स्कूल और परिवार सीखने के लिए आवश्यक कनेक्शन बनाना। न्यूयॉर्करू गिलफोर्ड प्रेस।
- कॉमर, जे.पी., और हेन्स, एन.एम. (2015)। स्कूलों में माता–पिता की भागीदारी एक पारिस्थितिक दृष्टिकोण। द एलीमेंट्री स्कूल जर्नल, 91 (3), 271–77।
- कूपर, एच.एम., लिंडसे, जे.जे., और नी, बी. (2020)। घर में गृहकार्य छात्र, परिवार और पालन–पोषण–शैली के अंतर गृहकार्य प्रक्रिया से कैसे संबंधित हैं। समकालीन शैक्षिक मनोविज्ञान, 25(4), 464–87।